ISSN: 2394-3122 (Online)
ISSN: 2394-6253 (Print)
Impact Factor: 6.03

Volume 12, Issue 4, April 2025

SK International Journal of Multidisciplinary Research Hub

Journal for all Subjects

e-ISJN: A4372-3088
p-ISJN: A4372-3089

Research Article / Survey Paper / Case Study

Published By: SK Publisher *(www.skpublisher.com)*

बदलते वैश्विक परिवेश में भारत–चीन संबंधों का विश्लेषणात्मक अध्ययन

Nitin Kumar
(M.A. & NET in Political Science)
V.&P.O.- Ritauli,
District- Rohtak,
Haryana India

DOI: https://doi.org/10.61165/sk.publisher.v12i4.3

शोध–आलेख सार :–

वस्तुतः चीन भारत का एक ऐसा पडोसी राज्य है जो उत्तर व पश्चिमी उत्तर दिशा से भारत की सुरक्षा को चुनौती देता रहा है। वर्ष 1962 में भारत पर चीनी हमले का इतिहास सर्वविदित है। वैसे तो स्वतंत्रता के बाद भारत ने हमेशा ही चीन व अन्य पडोसी देशो के साथ शांतिपुर्ण ढंग से अपने संबंधो का संचालन किया है। आज के बदलते वैश्विक परिवेश में भारत व चीन एशिया के दो सबसे बडे राष्ट्र हैं, जिनकी विश्व की कुल आबादी का 35 प्रतिशत निवास करता है तथा वैश्विक राजनीति में दोनों राष्ट्र के सामान्य हित हैं और वैश्विकरण के द्वारा उत्पन्न इनके राष्ट्रीय सम्प्रभुता, गरिमा एवं चुनौतियां भी सामान्य हैं। शीतयुद्धोतर काल के पश्चात भारत में वैश्वीकरण आने के बाद में दोनों देशों की अर्थव्यवस्था को वैश्विक बनाया एवं धीरे–धीरे 21वीं सदी में परिवर्तित कर दिया है। दोनों राष्ट्रों एशियन अर्थव्यवस्था के स्तम्भ होने के साथ साथ ऐसे जुड़वां ईंजन है जो एशियन अर्थव्यवस्था को संचालित करते हैं। चूंकि ये दोनों देश आर्थिक विकास के मार्ग पर अग्रसर है और विश्व शक्ति बनने की दिशा में निरंतर प्रगति कर रहें हैं। परंतु आज भी दोनों देशो में सीमा विवाद, जल विवाद, सीमा सुरक्षा व माओवादी गतिविधियों को लेकर तनाव देखने को मिलता हैं। फिर भी हम इस तथ्य को नही नकार सकते कि द्विपक्षीय संबंधों को लेकर दोनों देशों के सांझा हित हैं जो दोनो देशों के बीच तनाव को कम करते है। प्रस्तुत शोध पत्र में भारत–चीन संबंधों की विवेचना की गयी हैं।

मुख्य शब्द :– दक्षिण एशिया, शीत युद्ध, सीमा विवाद, वैश्वीकरण, सुरक्षा चुनौतियां।

भूमिकाः–

चूंकि भारत दक्षिण एशिया में स्थित एक ऐसा देश है जो हमेशा से ही अपने पडोसी देशों के साथ शांतिपूर्ण सह–अस्तित्व की नीति का पालन करता रहा है, परंतु चीन भारत का एक ऐसा पडोसी देश है जो बार–बार भारत की सुरक्षा को चुनौती देता रहा है। वस्तुतः भारत की उत्तर व उत्तर–पूर्वी रेखा चीन की दक्षिण–पश्चिम सीमा को छूती है। भारत का क्षेत्रफल लगभग 32 लाख वर्गमील है वहीं दूसरी ओर चीन का क्षेत्रफल लगभग 95 लाख वर्गमील है। प्राचीन समय में भारत–चीन के मध्य सौहार्दपूर्ण सांस्कृतिक व व्यापारिक संबंध विद्यमान थे। यदि दोनों देशों के इतिहास का अध्ययन किया जाए तो पता चलता है कि दोनों देशों में अच्छे व मधुर संबंध रहे हैं। प्राचीन काल में

© 2025, SK Publisher All Rights Reserved

चीनी यात्री फाह्यान व हयुनसांग भारत आए तथा भारतीय संस्कृति, साहित्य व राज–व्यवस्था पर अपनी रचनाएँ लिखी। इसी तरह भारत से ही महात्मा बुद्ध के प्रयासो से चीन में बौद्ध धर्म के प्रचार–प्रसार हेतु दोनों देशों में सांस्कृतिक संबंधो का विकसा हुआ। परंतु हम इस तथ्य को भी मानते है कि भारत की स्वतंत्रता के समय चीन में गृह युद्ध की स्थिति थी तथा चीन एक स्वतंत्र देश के रूप में वर्ष 1949 में विश्व मानचित्र पर उभरा। इसके बाद धीरे–धीरे चीन की ओर से भारत की सीमाओं का अतिक्रमण शुरू हुआ तथा बाद में तिब्बत समस्या के चलते दोनों देशों के संबंधों में कटुता आई और आज भी भारत–चीन संबंधो में कई बार तनाव देखा जा सकता है।

वास्तव में आधुनिक समय में भारत–चीन संबंधों की शुरूआत वर्ष 1927 के ब्रुसेल्स सम्मेलन के साथ हुई। इस सम्मेलन में कहा गया कि पश्चिमी साम्राज्यवाद को पराजित करने हेतु भारत–चीन के सहयोग की आवश्यकता है। आगे चलकर वर्ष 1931 में जापान द्वारा चीन पर आक्रमण का भारत ने विरोध किया तथा अपने देश में जापानी वस्तुओं के बहिष्कार का आह्वान किया, जिससे दोनों देश समीप आए। 15 अगस्त, 1947 को भारत ने आजादी प्राप्त करने के बाद तीसरी दुनिया अर्थात साम्राज्यवाद का शिकार देशों की आजादी का पुरजोर समर्थन किया। तत्पश्चात वर्ष 1949 में चीन की स्थापना को मान्यता देने वाला भारत पहला गैर–साम्यवादी देश बना। आगे चलकर वर्ष 1951 में हुई चीन–तिब्बत संधि का भारत ने समर्थन किया, जिसमें तिब्बत पर चीन के आधिपत्य को स्वीकार किया गया परन्तु इसमें चीन की क्षेत्रीय स्वायत्ता बनी रहने की बात कही गई। इसके बाद पंडित नेहरू के प्रयासो से वर्ष 1955 में भारत–चीन के मध्य पंचशील समझौते पर हस्ताक्षर हुए तथा हिन्दी–चीनी भाई–भाई के नारे लगे। परंतु दोनो देशों में तनाव उस समय देखने को मिला जब वर्ष 1959 में चीन ने तिब्बत पर केन्द्रीय राज्य के ढ़ांचे को थोपना चाहा तथा तिब्बत के धार्मिक गुरू दलाई लामा ने चौदह हजार लोगों के साथ भारत (धर्मशाला) में शरण ली। चीन ने इसका विरोध किया तथा इस समस्या के कारण भारत–चीन संबंधों में कटुता आई।

तिब्बत समस्या को लेकर वर्ष 1962 में भारत–चीन युद्ध हुआ, जिसमें भारत को हार का सामना करना पड़ा। वर्ष 1963 में छह गुटनिरपेक्ष राष्ट्रों– श्रीलंका, कम्बोडिरूा, मिस्र, बर्मा, इंडोनिशिया व घाना ने इस समस्या (भारत–चीन) के समाधान हेतु 'कोलम्बो प्रस्ताव' पारित किया, परन्तु समस्या का समाधान न हो सका। वर्ष 1964 मे चीन के परमाणु परीक्षण से चीन और भी शक्तिशाली देश हो गया। वर्ष 1965 व 1971 के भारत–पाक युद्ध में चीन ने पाकिस्तान का खुलकर समर्थन किया। इससे भारत–चीन संबंधो मे दरार उत्पन्न हुई। आगे चलकर जब वर्ष 1974 में भारत ने राजस्थान के पोखरण नामक स्थान पर परमाणु परीक्षण किया, जिसका चीन ने व्यापक विरोध किया। परंतु भारत की तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने भारत की साख को गिरने नही दिया और वह किसी भी बाहरी राजनीतिक ताकत के सामने नही झुकी।

जब वर्ष 1976 में चीन में सत्ता–परिवर्तन हुआ तथा शियाओ पिग चीन के प्रमुख बने तो उन्होंने चीन को शक्तिशाली बनाने हेतु पड़ोसी राज्यों से संबंध सुधार की नीति को अपनाया। इसी तरह वर्ष 1977 में भारत में जनता पार्टी की सरकार बनी तथा 1978 में लम्बे समय के अन्तराल के बाद भारतीय विदेश मंत्री अटल बिहारी वाजपेयी चीनी यात्रा पर गए तथा दोनों देशों के मध्य संबंध बहाली की दिशा में कदम उठाया। पहली बार भारत ने विदेशी धरती पर 26 जनवरी, 1980 को चीन में स्थित भारतीय दुतावास में गणतंत्र दिवस मनाया गया। इसके बाद वर्ष 1985 में राजीव गाँधी भारत के प्रधानमंत्री बने तथा इस दौरान दोनों देशों के संबंधों में गर्माहट आई। वर्ष 1985 में कोलकत्ता, बम्बई, शंघाई में दोबारा वाणिज्यिक दुतावास खोले गए, जो कि वर्ष 1961 से बन्द थे। भारत–चीन संबंधों का नया दौर उस

© 2025, SK Publisher All Rights Reserved

समय शुरू हुआ जब वर्ष 1988 में राजीव गाँधी चीनी यात्रा पर गए। यह 38 साल बाद किसी भारतीय प्रधानमंत्री की चीनी यात्रा थी। लेकिन भारत के प्रधानमंत्री वाजपेयी के नेतृत्व में वर्ष 1998 में भारत द्वारा पाँच परमाणु परीक्षण किये जाने के कारण दोनों देशों के संबंधों में दोबारा कटुता उत्पन्न हुई। फिर भी दोनों देशों ने आपसी संबंधों को सुधारने के प्रयास शुरू किये और इस क्रम में वर्ष 2000 में भारत के राष्ट्रपति चीनी यात्रा पर गए तथा वर्ष 2001 में चीनी राष्ट्रपति पेग भारत यात्रा पर आए। इसके बाद वर्ष 2003 में भारतीय प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी चीनी यात्रा पर गए, जिससे दोनों राष्ट्रों के संबंध फिर से पटरी पर आए तथा भारत–चीन संबंधो का नया दौर शुरू हुआ।

भारत में वर्ष 2004 में सत्ता परिवर्तन हुआ तथा कांग्रेस सरकार ने नेहरूवादी विचारधारा पर अमल करते हुए भारत–चीन संबंधों को सुधारने के प्रयास किये। इसके बाद वर्ष 2005 में चीनी प्रधानमंत्री वेन जियाबाओ भारत यात्रा पर आए तथा वर्ष 2008 में भारतीय प्रधानमंत्री डॉ0 मनमोहन सिंह चीन की यात्रा पर गए। इस दौरान दोनों देशो की ओर से आर्थिक सहयोग के क्षेत्र में सार्थक प्रयास की पहल की गई। इसके बाद वर्ष 2010 में भारतीय राष्ट्रपति प्रतिभा देवी सिंह पाटिल चीनी यात्रा पर गई तथा उन्होंने चीन में एक बौद्ध मन्दिर का उद्घाटन किया जो कि भारत की ओर से चीन को उपहार स्वरूप भेंट किया गया। इससे भारत–चीन के बीच सांस्कृतिक संबंधो का नया अध्याय शुरू हुआ।

इसी समय भारत–चीन संबंध सुधार की दिशा में उस समय अग्रसर हुए जब वर्ष 2010 में चीनी प्रधानमंत्री 'वेन जियाबाओ' भारत यात्रा पर आए। वर्ष 2012 में भारत द्वारा की गई 'कनेक्ट सेन्ट्रल एशिया नीति' की घोषणा का चीन ने समर्थन किया। इसके बाद वर्ष 2013 में डॉ0 मनमोहन सिंह चीनी यात्रा पर गए व वर्ष 2014 में चीनी राष्ट्रपति जिन पिंग भारत यात्रा पर आए तथा भारत–चीन के मध्य कई अहम् आर्थिक समझौते हुए। वर्ष 2014 में भारतीय स्टेट बैंक, आई. सी. सी आई. व एक्सिस बैंक तथा चीन के चाईना एक्सिस बैंक व चाईना डेवलपमेंट बैंक कॉरपोरेशन के मध्य कई समझौते हुए। जब वर्ष 2014 में भारत में सत्ता परिवर्तन हुआ तो प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने अपनी कुटनीतिक सफलता का परिचय देते हुए कई देशों की यात्रा की। इस क्रम में वर्ष 2015 में भारतीय विदेश मंत्री सुषमा स्वराज तथा उनके पश्चात भारतीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने चीन की यात्रा की। इससे दोनो देशों के बीच विश्वास का वातावरण पैदा हुआ तथा भारत–चीन संबंधों को नयी दिशा मिली।

परंतु भारत–चीन संबंधों में फिर से आपसी तनाव का वातावरण उस समय पैदा हुआ, जब वर्ष 2017 में चीन ने 'डोकलाम क्षेत्र' मे अपनी सेनाएं तैनात कर दी। डोकलाम वाद के चलते दोनों देशों की सेनाएँ कई दिनों तक आमने–सामने रही तथा भारत ने 'ब्रिक्स' सम्मेलन में इस विवाद का उठाया। 27 सितम्बर, 2017 को दोनों देशों ने अपनी–अपनी सेनाएँ वापस बुला ली, जिसे कुटनीतिक राजनीति के विशेषज्ञों ने 'अन्तर्राष्ट्रीय शांति व सौहार्द' की स्थापना के रूप में देखा। इसी तरह दोनो देशो में अधिक तनाव उस समय देखने को मिला, जब 'वन बेल्ट, वन रोड़' के माध्यम से चीन द्वारा तिब्बत से जुड़ने के मार्ग का निर्माण के प्रयास किये गये। बाद में भारत–चीन संबंध सुधार की दिशा में अग्रसर हुए। आज भारत–चीन संबंध सामान्य माने जा सकते हैं। अब चीन भी इस बात को समझ चुका है कि आज का भारत 21वीं सदी का भारत हैं, इसलिए चीन 1962 वाली गलती करने का प्रयास कभी नही करेगा।

सारांश:–

इस प्रकार हम कह सकते है कि श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारत के विदेशी संबंध सुधार की दिशा में अग्रसर हो रहे है। भारत ने हमेशा ही पडोसी देशो के साथ शांतिपूर्ण संबंधों को प्राथमिकता दी है। आज भारत–चीन 21वीं

© 2025, SK Publisher All Rights Reserved

सदी में यथार्थवाद की नीति का अनुसरण करते हुए अपने राष्ट्र हितों की पूर्ति हेतु कृतज्ञ हैं तथा दोनों देश आपसी विवादों का समाधान शांतिपूर्ण तरीके से चाहते हैं। इसी तरह आज दोनों देश 'ब्रिक्स', शंघाई सहयोग आदि क्षेत्रीय सहयोग संगठनों के मंच साझा कर रहे हैं। वर्तमान परिवेश में भारत दुनिया के 10 बड़े बाजारों में है, इसलिए आज चीन का झुकाव भारत की तरफ बढ़ रहा है। इसके साथ–साथ अमेरिकी महाशक्ति को चुनौती देने हेतु भी चीन को भारत के सहयोग की आवश्यकता है। वर्तमान समय में भारत–चीन संबंध अन्तर्राष्ट्रीय शांति की स्थापना के संदर्भ में उभर के सामने आ रहे हैं। अतः आज इस बात की महती आवश्यकता है कि दोनों देशों को आपसी सहयोग की दिशा में अग्रसर होते हुए विश्व राजनीति में दक्षिण एशिया की भूमिका का संचालन करे।

संदर्भ सूची

१ शौरी, अरूण, भारत–चीन सम्बन्ध, प्रभात प्रकाशन नई दिल्ली, 2011.

२ खन्ना, वी. एन. एवं अरोड़ा, लिपाक्षी, भारत की विदेश नीति, विकास पब्लिकेशन हाउस, नई दिल्ली, 2013.

३ शर्मा, प्रभुदत्त, अंतर्राष्ट्रीय राजनीति, कॉलेज बुक डिपो, नई दिल्ली, 2014.

४ वर्ल्ड फोक्स, अंक–47 फरवरी 2016

५ फाडिया, बी. एल, अंतर्राष्ट्रीय राजनीति, साहित्य भवन, आगरा, 2018

६ गुप्ता, के.आर., इंडिया–चाईना रिलेशन, एटलांटिक पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 2018.

७ पंत, पुष्पेश, 21वीं शताब्दी में अंतराष्ट्रीय संबंध, मैग्राहिल एजुकेशन पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 2019.https://currentaffairs.adda247.com/indo-china-relations/

८ https://carnegieindia.org/2021/03/10/road-from-galwan-future-of-india-china-relations-pub-84019

९ https://www.legalserviceindia.com/legal/article-8515-indo-china-relationship-opportunities-and-challenges-.html

:::. Cite this article .:::

Kumar, N. (2025). बदलते वैश्विक परिवेश में भारत-चीन संबंधों का विश्लेषणात्मक अध्ययन. SK INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH HUB, 12(4), 20–23. https://doi.org/10.61165/sk.publisher.v12i4.3

© 2025, SK Publisher All Rights Reserved